प्रेस विज्ञप्ति

लोक भवन, राँची

दिनांक : 30 अक्टूबर, 2026 :-

(1) माननीय राज्यपाल-सह-झारखण्ड राज्य के विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति श्री संतोष कुमार गंगवार ने आज विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग के 11वें दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि 'विकसित भारत@2047' के संकल्प को साकार करने में युवाओं की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। विकसित भारत का निर्माण केवल आर्थिक प्रगति से नहीं, बल्कि शिक्षित, कुशल, जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिकों के योगदान से होगा। विद्यार्थियों को अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों को राष्ट्र की प्रगति से जोड़कर आगे बढ़ना चाहिए।

राज्यपाल महोदय ने कहा कि उपाधि शिक्षा का प्रमाण है, लेकिन ज्ञान का वास्तविक मूल्य इस बात से तय होता है कि उसका उपयोग समाज और देश के हित में किस प्रकार किया जाता है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को निरंतर सीखने, अपनी क्षमताओं को विकसित करने और बदलती

परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को तैयार रखने की आवश्यकता है।

माननीय राज्यपाल ने कहा कि आचार्य विनोबा भावे के नाम पर स्थापित इस विश्वविद्यालय के लिए उनका जीवन और विचार विशेष प्रेरणा के स्रोत हैं। भू-दान आंदोलन के माध्यम से संत विनोबा जी ने मानवता, करुणा, सामाजिक सहयोग और न्याय का संदेश दिया। उनके विचार प्रेरित करते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत उन्नति नहीं, बल्कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास का लाभ पहुँचाना भी होना चाहिए।

राज्यपाल महोदय ने कहा कि भारत आज विज्ञान, तकनीक, अंतरिक्ष, डिजिटल सेवाओं, उद्यमिता और नवाचार के क्षेत्रों में तेजी से आगे बढ़ रहा है। स्टार्टअप इंडिया, इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन और आत्मनिर्भर भारत जैसी पहल युवाओं के लिए नए अवसर सृजित कर रही हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से इन अवसरों का लाभ उठाने, नए विचारों को उद्यम का रूप देने तथा ज्ञान के साथ विवेक और कौशल के साथ नैतिकता को भी महत्व देने का आह्वान किया।

माननीय राज्यपाल ने झारखण्ड की संभावनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि यह राज्य प्राकृतिक संपदा, सांस्कृतिक विविधता और समृद्ध जनजातीय परंपराओं से परिपूर्ण है। यहाँ के युवाओं की प्रतिभा और परिश्रम राज्य की वास्तविक शक्ति है। उच्च शिक्षण संस्थानों को इस प्रतिभा को सही दिशा देते हुए शोध, नवाचार और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप समाधान विकसित करने पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

राज्यपाल महोदय ने विनोबा भावे विश्वविद्यालय से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अनुसंधान और नैतिक मूल्यों को समान महत्व देने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालयों को ऐसे विचारशील नागरिक तैयार करने चाहिए, जो अपने अधिकारों के प्रति सजग, कर्तव्यों के प्रति प्रतिबद्ध और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सक्षम हों। शिक्षा की सार्थकता तभी है, जब उसका लाभ विश्वविद्यालय की सीमाओं से बाहर निकलकर समाज के जीवन में दिखाई दे।